४४ शंयुर्बार्हस्पत्यः।इन्द्रः। त्रिष्टुप्, १-६ अनुष्टुप्, ७-९ (८ वा) विराट्।

**यो रयिवो रयिंतमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः।**

**सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ ६.०४४.०१**

यः। रयिवः- धनवन्। रयिंतमः- अतिशयेन धनवान्। द्युम्नैः- दीप्तिभिः। द्युम्नवत्तमः- अतिशयेन दीप्तिमान्। सः। सोमः- रसः। ते- त्वदर्थम्। सुतः- निष्पादितः। स्वधापते- अन्नपते। ते- तव। मदः- हर्षस्तृप्तिर्वा। अस्ति- भवति ॥१॥

**यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो दामा मतीनाम्।**

**सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ ६.०४४.०२**

तुविशुग्म- प्रभूतानन्द। यः। ते- तव। शग्मः- आनन्दभूतः सोमः। रायः- सम्पदः। मतीनाम्। दामा- दाता। सुतः स इन्द्र तेस्ति स्वधापते मदः ॥२॥

**येन वृद्धो न शवसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः।**

**सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ ६.०४४.०३**

येन। शवसा- बलेन। वृद्धः- प्रवृद्धः। न- च। स्वाभिः- आत्मीयाभिः। ऊतिभिः- रक्षाशक्तिभिः। तुरः- वृत्रहिंसकः। न- च भवति। सोमः सुतः स इन्द्र तेस्ति स्वधापते मदः ॥३॥

**त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्।**

**इन्द्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम्॥ ६.०४४.०४**

त्यम्- तम्। वः- युष्मदर्थम्। अप्रहणम्- अप्रहन्तारम्। अहिंसन्तम्। शवसस्पतिम्- बलाधिदैवतम्। विश्वचर्षणिम्- सर्वभूतहितम्। विश्वासाहम्- सर्वशत्रवभिभावुकम्। नरम्- नेतारम्। मंहिष्ठम्- अतिशयेन स्तुत्यम्। इन्द्रम्। गृणीषे- स्तौमि ॥४॥

**यं वर्धयन्तीद्गिरः पतिं तुरस्य राधसः।**

**तमिन्न्वस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः॥ ६.०४४.०५**



Dr. Ranganji
WEBOLIM

यम्। तुरस्य- त्वरमाणायाः। राधसः- संसिद्धेः। पतिम्- पालकम्। गिरः- वाचः। वर्धयन्ति। अस्य- तस्य। तम्- तत्। शुष्मम्- बलम्। देवी- देव्यौ। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। सपर्यतः- परिचरतः ॥५॥

**तद्व उक्थस्य बर्हणेन्द्रायोपस्तृणीषणि।**
**विपो न यस्योतयो वि यद्रोहन्ति सक्षितः॥ ६.०४४.०६**

वः- युष्माकम्। उक्थस्य- मन्त्रस्य। तत्। बर्हणा- बृहत्। इन्द्राय। उपस्तृणीषणि- उपस्तरणीयम्। यस्य। ऊतयः- रक्षाशक्तयः। विपः- मेधाविनः। न- इव। सन्ति। सक्षितः- समाननिवासाः। वि रोहन्ति- इन्द्रमारोहन्ति ॥६॥

**अविदद्दक्षं मित्रो नवीयान्पपानो देवेभ्यो वस्यो अचैत्।**
**ससवान्स्तौलाभिर्धौतरीभिरुरुष्या पायुरभवत्सखिभ्यः॥ ६.०४४.०७**

मित्रः- सखा। नवीयान्- अभिनवः। दक्षम्- शक्तिम्। अविदत्- ज्ञातवान्। पपानः- अनुभूतियुक्तः। देवेभ्यः। वस्यः- श्रेष्ठं धनम्। अचैत्- चिनोति। ससवान्- अन्नवान्। स्तौलाभिः- स्थूलाभिः। धतरीभिः- कम्पकाभिः प्राणवडवाभिः। उरुष्या- रक्षेच्छया। सखिभ्यः- स्वमित्रेभ्यः। पायुः- पालकः। अभवत्- बभूव ॥७॥

**ऋतस्य पथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन्।**
**दधानो नाम महो वचोभिर्वपुर्दृशये वेन्यो व्यावः॥ ६.०४४.०८**

तस्य- सत्यस्य। पथि- मार्गे। वेधाः- मेधावी सोमो रसः। अपायि- अनुभूतः। श्रिये- श्रेयसे। मनांसि- मननानि। देवासः- देवाः। अक्रन्- अकुर्वन्। महः- महत्। नाम। दधानः- धारयन्। वेन्यः- कान्तः। वचोभिः- तन्नामजपैः। दृशये- दर्शनाय। वपुः- आत्मीयं देहम्। व्यावः- विवृणोतु प्रकाशयतु ॥८॥

**द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः।**



Dr. Rangani
WEBOLIM

**वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभिर्धनस्य सातावस्माँ अविड्ढि॥ ६.०४४.०९**

द्युमत्तमम्- अतिशयेन दीप्तम्। दक्षम्- सामर्थ्यम्। अस्मे- अस्मभ्यम्। धेहि- धारय यच्छ। जनानाम्। पूर्वीः- प्राचीनान्। अरातीः- रिपून्। सेध- निषेध निवारय। शचीभिः- स्वशक्तिभिः। वर्षीयः- वर्षकम्। वयः- अन्नम्। कृणुहि- कुरु। धनस्य- सम्पदः। सातौ- लाभे। अस्मान्- नः। अविड्ढि- गमय ॥९॥

**इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः।**

**नकिरापिर्ददृशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः॥ ६.०४४.१०**

इन्द्र। मघवन्- धनवन्। हरिवः- प्राणतुरगसम्पन्न। तुभ्यम्- ते। वयम्। दात्रे- दानशीलाय। अभूम। वि वेनः- अस्मान् प्रति विगतकामः। मा भव। मर्त्यत्रा- मर्त्येषु। नकिः- न कोपि। आपिः- बन्धुः। ददृशे। किम्- किं बहुना। त्वा- त्वाम्। रध्रचोदनम्- संसिद्धिचोदकम्। आहुः- वदन्ति ॥१०॥

**मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम।**

**पूर्वीष्ट इन्द्र निष्षिधो जनेषु जह्यसुष्वीन्प्र वृहापृणतः॥ ६.०४४.११**

वृषभ- वर्षक। जस्वने- उपक्षपयित्रे। नः- अस्मान्। मा। ररीथाः- दाः। रेवतः- दानयोग्यधनवतः। ते- तव। सख्ये- मैत्र्याम्। मा। रिषाम- हिंसिता भवेम। इन्द्र। ते- तव। पूर्वीः- प्राचीनाः। निष्षिधः- निष्षेधा निवारणानीति सायणः। जनेषु। जहि- नाशय। असुष्वीनपृणतः- अदातॄन्। जहि ॥११॥

**उदभ्राणीव स्तनयन्नियर्तीन्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्या।**

**त्वमसि प्रदिवः कारुधायाः मा त्वादामान आ दभन्मघोनः॥ ६.०४४.१२**

इन्द्रः। अभ्राणीव उत्- मेघानुद्गमयन्निव। स्तनयन्- गर्जयन्। इयर्ति- गच्छति। अश्व्यानि- प्राणतुरगान्। गव्या- चिद्रश्मिभूतधेनूः। राधांसि- संसद्धीः प्रति। त्वम्। प्रदिवः- प्रकर्षप्रकाशः।



Dr. Ranganji
WEBOLIM

कारुधायाः- कर्मवीरधारकः। त्वा- त्वाम्। अदामानः- अदातारो लोभिनः। मघोनः- धनवन्तः। मा। आ दभन्- हिंसिषुः ॥१२॥

**अध्वर्यो वीर प्र महे सुतानामिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा।**
**यः पूर्व्याभिरुत नूतनाभिर्गीर्भिर्ववृधे गृणतामृषीणाम्॥ ६.०४४.१३**

अध्वर्यो- ध्वररहितकर्मपर। वीर। महे- महात्मने। इन्द्राय। प्र भर- रसमाहर। सः- असौ। हि- खलु। अस्य- एतस्य रसस्य। राजा- ईशः। यः पूर्व्याभिः- पुराणीभिः। उत- अपि च। नूतनाभिः- अभिनवाभिः। गृणताम्- स्तुवताम्। ऋषीणाम्- सूक्ष्मदर्शिनाम्। गीर्भिः- वाग्भिः। ववृधे ॥१३॥

**अस्य मदे पुरु वर्पांसि विद्वानिन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान।**
**तमु प्र होषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्यै॥ ६.०४४.१४**

अस्य- एतस्य रसस्य। मदे- हर्षे। पुरु- बहूनि। वर्पांसि- रूपाणि। वृत्राणि- आवरणानि। विद्वान्- ज्ञानी। इन्द्रः। अप्रति- अप्रतिगतः। जघान- हिंसितवान्। तम्। मधुमन्तम्- मधुरम्। सोमम्- रसम्। शिप्रिणे- शोभननासिकोपलक्षितप्राणाय। वीराय। अस्मै- एतस्मै। पिबध्यै- अनुभवितुम्। प्र- प्रकर्षेण। होषि- समर्पय ॥१४॥

**पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः।**
**गन्ता यज्ञं परावतश्चिदच्छा वसुर्धीनामविता कारुधायाः॥ ६.०४४.१५**

इन्द्रः। सुतम्- निष्पन्नस्य रसस्य। पाता। अस्तु- भवतु। मन्दसानः- हर्षितः। वज्रेण। वृत्रम्- आवरणस्य। हन्ता- नाशकः। परावतश्चित्- श्रेष्ठात् स्वस्थानात्। यज्ञम्- दानं देवपूजां सङ्गतिकरणम्। अच्छ- अभिलक्ष्य। गन्ता। वसुः- शरण्यः। धीनाम्। अविता- रक्षिता। कारुधायाः- उपासकधारकश्च भवतु ॥१५॥

**इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपानमिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि।**
**मत्सद्यथा सौमनसाय देवं व्य१स्मद्वेषो युयवद्व्यंहः॥ ६.०४४.१६**



Dr. Rangani
WEBOLIM

इदं त्यत्- तदेतत्। पात्रम्- पातव्यम्। इन्द्रपानम्। इन्द्रस्य। प्रियम्। अमृतम्। अपायि- अनुभवतु। स रसः। देवम्- इन्द्रम्। सौमनसाय। मत्सत्- मादयेत्। अस्मत्- अस्मत्तः। द्वेषः- द्वेषभावनम्। अंहम्- अघम्। वि युयवत्- वियोजयतु ॥१६॥

**एना मन्दानो जहि शूर शत्रूञ्जामिमजामिं मघवन्नमित्रान्।**
**अभिषेणाँ अभ्याञ्देदिशानान्पराच इन्द्र प्र मृणा जही च॥ ६.०४४.१७**

एना- अनेन। मन्दानः- हृष्टः। जामिम्- बन्धुम्। अजामिम्- अबन्धुम्। मघवन्- इन्द्र। अमित्रान्- शत्रून्। जहि। अभिषेणान्- अभिगतान्। अभ्यादिदेशानान्- आयुधानि आदिशतः। विसृजतः। इन्द्र। पराचः- पराङ्मुखा यथा भवन्ति तथा। प्र- प्रकर्षेण। मृण- बाधस्व। जहि- नाशय। च ॥१७॥

**आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र पृत्स्वस्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः।**
**अपां तोकस्य तनयस्य जेष इन्द्र सूरीन्कृणुहि स्मा नो अर्धम्॥ ६.०४४.१८**

मघवन्- सम्पद्वन्। इन्द्र। आसु- एतेषु। पृत्सु- युद्धेषु। अस्मभ्यम्- नः। महि- महत्। वरिवः- श्रेष्ठम्। सुगम्- सुखम्। कः- कुरु। अपाम्- जीवोदकानाम्। तोकस्य तनयस्य- सन्ततीनाम्। जेषे- लाभे। इन्द्र। नः- अस्मान्। सूरीन्- विदुषः। अर्धं- समृद्धान् भवदंशान् वा। कृणुहि- कुरु ॥१८॥

**आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः।**
**अस्मत्राञ्चो वृषणो वज्रवाहो वृष्णे मदाय सुयुजो वहन्तु॥ ६.०४४.१९**

हरयः- आकर्षणशक्तिभूताः। वृषणः- वर्षकाः। युजानाः- योगयुक्ताः। वृषरथासः- वर्षकरंहणाः। वृषरश्मयः- वर्षकरज्जवः। सुयुजः- सुष्ठु नियोजिताः। अत्याः- प्राणाश्वाः। अस्मत्राः- अस्मदभिमुखाः। वज्रबाहो- वज्रपाणे। वृष्णे- वर्षकाय। मदाय- हर्षाय। त्वा- त्वाम्। आ वहन्तु ॥१९॥



Dr. Rangani
WEBOLIM

**आ ते॑ वृष॒न्वृष॑णो॒ द्रोण॑मस्थुर्घृ॒तप्रु॑षो॒ नोर्म॑यो॒ मद॑न्तः।**

**इन्द्र॒ प्र तुभ्यं॒ वृष॑भिः सु॒तानां॒ वृष्णे॑ भरन्ति वृष॒भाय॒ सोम॑म्॥ ६.०४४.२०**

वृषन्- वर्षक। वृषणः- वर्षका यजमानाः। ते- अमी। घृतप्रुषः- उदकसिञ्चकाः। नोर्मयः- समुद्रतरङ्गा इव। मदन्तः- हृष्टाः। द्रोणम्- त्वद्रथम्। आ अस्थुः- आतिष्ठन्त। इन्द्र। तुभ्यम्- ते। सुतानाम्- निष्पन्नानां रसानाम्। वृषभिः- वर्षकैः। वृष्णे- वर्षकाय। वृषभाय- पुरुषोत्तमायेन्द्राय। सोमम्- रसम्। भरन्ति- धारयन्ति ॥२० ॥

**वृषा॑सि दि॒वो वृ॑ष॒भः पृ॑थि॒व्या वृषा॒ सिन्धू॑नां वृष॒भः स्तिया॑नाम्।**

**वृष्णे॑ त॒ इन्दु॑र्वृषभ पीपाय स्वा॒दू रसो॑ मधु॒पेयो॒ वरा॑य॥ ६.०४४.२१**

दिवः- द्युलोकस्य। वृषा- वर्षकः। असि- भवसि। पृथिव्याः- भूम्याः। वृषभः- वर्षकः। सिन्धूनाम्- नदीनाम्। वृषा- वर्षकः। स्तियानाम्- सङ्घभूतानां प्राणिनाम्। वृषभः- वर्षकः। वृष्णे- वर्षकाय। ते- तुभ्यम्। वृषभ- वर्षक। इन्दुः- क्लेदनशीलो रसः। स्वादुः। मधुपेयः- मधुरः। रसः। वराय- श्रेष्ठाय। पीपाय- प्यायते वर्धते ॥२१ ॥

**अ॒यं दे॒वः सह॑सा॒ जाय॑मान॒ इन्द्रे॑ण यु॒जा प॒णिम॑स्तभायत्।**

**अ॒यं स्वस्य॑ पि॒तुराय॑ुधा॒नीन्दु॑रमुष्णा॒दशि॑वस्य मा॒यां॥ ६.०४४.२२**

अयम्- एषः। देवः- लीलाशीलः सोमो रसः। सहसा- शक्त्या। जायमानः- उत्पन्नः। इन्द्रेण- ईशनाधिदैवतेन। युजा- सङ्गतः। पणिम्- लोभभावनप्रतीकरक्षः। अस्तभायत्- बबाधे। अयम्। स्वस्य। पितुः- बन्धने गोपयितुः। अशिवस्य- अमङ्गलस्य। आयुधानि- प्रहरणानि। मायाः- शक्तीः। अमुष्णात्- हृतवान् ॥२२ ॥

**अ॒यम॑कृणोदु॒षसः॑ सु॒पत्नी॑र॒यं सूर्ये॑ अदधा॒ज्ज्योति॑र॒न्तः।**

**अ॒यं त्रि॒धातु॑ दि॒वि रो॑च॒नेषु॑ त्रि॒तेषु॑ विन्ददमृ॒तं निगू॑ळ्हम्॥ ६.०४४.२३**



Dr. Rangaji
WEBOLIM

अयम्- एषः। उषसः- प्रभातीर्विद्याः। सुपत्नीः- शोभनरक्षणीः। अकृणोत्- अकरोत्। अयम्। सूर्ये- सवितरि आत्मनि। अन्तः। ज्योतिः- प्रकाशम्। अदधात्- स्थापितवान्। आत्मप्रकाशं प्रकटितवानिति भावः। अयम्। निगूळ्हम्- निहितम्। अमृतम्। त्रिधातु- त्रिप्रकारम्। दिवि- चिदाकाशे। त्रितेषु रोचनेषु- भूर्भुवःसुवराख्यान्नप्राणमनःसु च। विन्दत्- ज्ञातवान् लेभे वा ॥२३॥

**अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायदयं रथमयुनक्सप्तरश्मिम्।**
**अयं गोषु शच्या पक्वमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम्॥ ६.०४४.२४**

अयम्- एषः। द्यवापृथिवी- द्यावापृथिव्यौ। वि स्कभायत्- विविधमस्थापयत्। अयम्। सप्तरश्मिम्- सप्तरश्मिभिः। रथम्। अयुनक्- योजितवान्। अयम्। गोषु- धेनुषु रश्मिषु। शच्या- प्रज्ञया। अन्तः। पक्वम्। अकरोत्। एतस्मा इन्द्राय। सोमः- रसाधिदेवता। दशयन्त्रम्- बहुयन्त्रितम्। उत्सम्- प्रवाहम्। दधार- अधारयत्। चक्षुश्च श्रोत्रं च मनश्च वाक्च प्राणापानौ देह इदं शरीरम्। द्वौ प्रत्यञ्चावनुलोमौ विसर्गावितं तं मन्ये दशयन्त्रमुत्समिति खैलकव्याख्यानं सायणोद्धृतम् ॥२४॥



Dr. Ranganji
WEBOLIM